NATURE OF THE FRENCH REVOLUTION

FOR:U.G.PART-2,PAPER-4
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

फ्रांसीसी क्रांति एक ऐसी क्रांति थी जिसका प्रारंभ तो कुलीन वर्ग ने किया फिर आगे चलकर इसका नेतृत्व मध्यवर्ग के हाथों में आया कुछ समय के लिए यह क्रांतिकारी तत्वों के प्रभाव में रहा और अंत में एक सैनिक तानाशाह के साथ समाप्त हुआ।

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

1. क्रांति के प्रथम चरण में नेतृत्व तृतीय स्टेट के बुर्जुआ तत्वों के हाथ में था ।मध्यम वर्गीय नेतृत्व ने निजी संपत्ति को ध्यान में रखते हुए कुछ सिद्धांत भी बनाए ।वस्तुतः सामंतवाद के अंत की घोषणा तो कर दी गई किंतु सामंती अधिकारों को यूंही नहीं छोड़ दिया गया बल्कि भूमि पतियों की क्षतिपूर्ति करने के बाद ही किसान किसी उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकते थे।

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

- 2. मानव अधिकारों की घोषणा में मध्यम वर्गीय प्रभाव देखा जा सकता है संपत्ति के अधिकार को मनुष्य के नैसर्गिक अधिकारो की श्रेणी में रखा गया जो बुजुर्गों हितों के संरक्षण से संबंधित है।
- व्यस्क मताधिकार की बात तो की गई किंतु संविधान में नागरिक शब्द का अत्यंत संकुचित अर्थों में प्रयोग किया गया ।नागरिक को सक्रिय और निष्क्रिय नागरिकों में विभाजित किया गया तथा सक्रिय नागरिक को ही मत देने का अधिकार दिया गया। मताधिकार को संपत्ति विषयक बनाया गया।

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

- प्रतिनिधि होने के लिए भी संपत्ति की योग्यता को आधार बनाया गया । धनी लोग ही राजनीति क्रियाकलापों में भाग ले सकते थे धनी लोग मध्यम वर्ग से जुड़े थे।
- 3. फ्रांसीसी क्रांति ने मजदूरों के हितों को नजरअंदाज किया और श्रमिक आंदोलन को हतोत्साहित किया ।क्रांति के दौरान श्रमिक वर्गने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी किंतु बुजुर्वा नेतृत्व को उसकी बढ़ती स्थिति मंजूर नहीं थी।

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

अत: नेशनल असेंबली ने निरंकुश राजतंत्र युग में निर्मित कानूनों को पुनः लागू कर दिया जिसके तहत सभी श्रमिक संघ संबंधी कार्यों पर प्रतिबंध लगा दिए गए और गिल्डो को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

4. नेशनल असेंबली में बुर्जुआओं की प्रधानता थी और उसमें जिरोंदेस्त और जैकोबियन भी इसी से संबंधित थे।

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

यधपि जेकोबियन सर्वहारा वर्ग के हित की बात करते थे परंतु आतंक के राज्य की स्थापना में बुर्जुआं हितों को ही ऊपर रखा गया और श्रमिकों प्रतिक्रियाओं को दबाने हेतु सेना की सहायता ले गई।

5.डायरेक्टररी के शासन में भी मध्यम वर्गीय हितों को प्रमुखता दी गई ।संचालक मंडल ने जिस द्विसदनीय विधायिका का निर्माण किया उसके सभी सदस्य मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी थे

क्रांति का मध्यमवर्गीय स्वरूप

6. नेपोलियन के सुधारों पर भी बुर्जुआ प्रभाव देखा जा सकता है उसने बुर्जुआ हितों को संरक्षित रखते हुए अपनी विधि संहिता में संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित रखा। कुलीनों को व्यापक अधिकार दिए तथा उसके व्यापारिक और वाणिज्यिक सुधारों का फायदा मध्यवर्ग को ही मिला ।

क्रांति का विश्वव्यापी स्वरूप

- फ्रांसीसी क्रांति एक विश्वव्यापी चरित्र को लिए हुए थी। क्रांतिकारियों ने 27 Aug.1789 में मनुष्य तथा नागरिक अधिकारो की घोषणा की ।इसके तहत कहा गया कि जन्म से सामान पैदा होने के कारण सभी मनुष्य को समान अधिकार मिलना चाहिए और यह सभी देशों के लिए ,सभी मनुष्यों के लिए ,सभी समय के लिए और सारी दुनिया के लिए है।

क्रांति का विश्वव्यापी स्वरूप

- फ्रांसीसी क्रांति का नारा स्वतंत्रता ,समानता और बंधुत्व संपूर्ण यूरोप में गूंज उठा ।क्रांति के प्रभाव दूरगामी रहे ।इससे समस्त यूरोप आच्छादित हुआ । इसी संदर्भ में कहा गया कि यदि फ्रांस को जुकाम होता है तो समस्त यूरोप छींकता है

क्रांति सुनियोजित नहीं

- क्रांति रूसी क्रांति के समान सुनियोजित नहीं थी ।रूसी क्रांति बोल्शेविक द्वारा सुनियोजित थी और उसका मुख्य उद्देश्य सत्ता हासिल कर सर्वहारा का शासन स्थापित करना था लेकिन फ्रांसीसी क्रांति शुरू से अंत तक घटनाओं और परिस्थितियों का शिकार होती रही ।घटनाएं भी इस तरह से नहीं घटी जिस तरह से क्रांतिकारियों ने चाहा बल्कि घटनाओं ने क्रांतिकारियों को अपना रास्ता बदलने के लिए मजबूर किया।

क्रांति सुनियोजित नहीं

- स्टेटस जनरल की बैठक में यदि तृतीय स्टेट की बात अन्य स्टेटस ने मान ली होती तो क्रांति का रुख दूसरा होता ।इसी प्रकार आतंक का राज और डायरेक्टरी के शासन भी सुनियोजित ढंग से नहीं चले। इस दृष्टि से यह क्रांति अव्यवस्थित थी

क्रांति का अधिनायकवादी स्वरूप

फ्रांसीसी क्रांति में सर्वसाधारण की भागीदारी रही थी किंतु उनके हितों को नजरअंदाज करके क्रांति ने अधिनायकवाद का रूप धारण कर लिया था जिसमें किसी एक व्यक्ति के सिद्धांत और इच्छाओं की प्रधानता थी। क्रांति के दौरान *रोब्सपियर* के नेतृत्व में तानाशाही सरकार या अधिनायक तंत्र की स्थापना हुई थी और आगे चलकर *नेपोलियन* ने भी अधिनायक तंत्र की स्थापना की।

क्रांति का प्रगतिशील स्वरूप

फ्रांसीसी क्रांति पुरातन व्यवस्था में व्याप्त तमाम विसंगतियों के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिक्रिया थी। क्रांति ने निरंकुश राजतंत्र,असमानता पर आधारित फ्रांसीसी समाज , विलासतापूर्ण पादरी वर्ग तथा आर्थिक दिवालियापन के संकट से जूझ रहे प्रशासन का अंत कर फ्रांस में प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया ।

क्रांति का प्रगतिशील स्वरूप

फ्रांसीसी क्रांति ने मानवाधिकारों की घोषणा, स्वतंत्रता ,समानता और बंधुत्व के नारे तथा राष्ट्रीयता के विचार से समस्त विश्व को अवगत कराया परिणाम स्वरूप विश्व के कई देशों में राजनीतिक अधिकारों की मांग को लेकर जन आंदोलन होने लगे ।इटली एवं जर्मनी के एकीकरण की भावना को बल मिला ।धर्म और राजनीति के पृथक्करण का मुद्दा पहली बार इस क्रांति के दौरान उठा।